

## संचयन

### पाठ - 1 गिल्लू

‘महादेवी वर्मा’

#### प्रश्न-उत्तर

प्र.1- सोनजुही में लगी पीली कली को देख लेखिका के मन में कौन- से विचार उमड़ने लगे ?

उत्तर- सोनजुही के पौधे में लगी पीली कली को देखकर लेखिका को गिल्लू का स्मरण हो आया क्योंकि गिल्लू को सोनजुही की लता बहुत प्रिय थी, जिसकी सघन हरियाली में वह छिपकर बैठा करता था। सोनजुही की पीली कली को देखकर लेखिका को ऐसा लगा कि गिल्लू उस पीले फूल के रूप में पुनः प्रकट होगा।

प्र.2- पाठ के आधार पर कौए को एक साथ समादरित और अनादरित प्राणी क्यों कहा गया है ?

उत्तर- कौए को एक साथ समादरित और अनादरित प्राणी इसलिए कहा गया है क्योंकि पितृपक्ष में यही कौए पुरखों के रूप में अन्न ग्रहण करते हैं और कभी-कभी ये अपनी कर्कश वाणी में दूरस्थ प्रियजनों के आने का संदेश सुनाते हैं इसलिए वह आदर के पात्र बनते हैं लेकिन दूसरी ओर कौवे के काँव-काँव करने को अशुभ भी माना जाता है और अपने दुर्व्यवहार, कर्कशवाणी, मांसाहारी और स्वार्थी प्रवृत्ति के कारण ये लोगों के अनादर के पात्र बनते हैं। इसलिए कौए कभी सम्मानित होते हैं तो कभी अपमानित करके उड़ा दिए जाते हैं।

### प्र.3- गिलहरी के घायल बच्चे का उपचार कैसे किया गया ?

उत्तर- महादेवी वर्मा ने गिलहरी के घायल बच्चे का उपचार ममतापूर्वक किया। पहले वह उसे कमरे में लाई और उसका खून पोंछकर घावों पर पेंसिलिन का मरहम लगाया और फिर उसे रुई की बत्ती से दूध पिलाने की कोशिश की गई। कुछ समय बाद मुँह में पानी की बूँदें टपकाई गई। लेखिका के इस कोमलतापूर्वक उपचार से वह तीन दिनों में ही स्वस्थ हो गया।

### प्र.4- लेखिका का ध्यान आकर्षित करने के लिए गिल्लू क्या करता था ?

उत्तर- लेखिका का ध्यान आकर्षित करने के लिए गिल्लू उनके पैरों तक आकर सर से परदे पर चढ़ जाता और फिर उसी तेज़ी से उतरता। उसका यह दौड़ने का क्रम तब तक चलता जब तक लेखिका उसे पकड़ने के लिए न उठती।

### प्र.5- गिल्लू को मुक्त करने की आवश्यकता क्यों समझी गई और उसके लिए लेखिका ने क्या उपाय किया ?

उत्तर- जब बाहर की गिलहरियाँ खिड़की की जाली के पास आकर चिक- चिक करने लगी, तो गिल्लू भी जाली के पास बैठकर बाहर खेलती हुई गिलहरियों को देखने लगा तब उस लघु प्राणी के जीवन के स्वाभाविक विकास के लिए लेखिका ने उसे मुक्त करने की आवश्यकता समझी।

उसे मुक्त करने के लिए लेखिका खिड़की से कीलें निकालकर जाली का एक कोना खोल दिया ताकि गिल्लू इस मार्ग से अंदर और बाहर आ-जा सके।

### प्र.6- गिल्लू किन अर्थों में परिचारिका की भूमिका निभा रहा था ?

उत्तर- लेखिका जब अपनी अस्वस्थता के दिनों में विश्राम करती, तो गिल्लू उनके तकिए पर सिरहाने बैठकर अपने नन्हें-नन्हें पंजों से उनके सिर और बालों को हौले- हौले

सहलाता रहता था | वह एक कुशल परिचारिका के समान अस्वस्थ लेखिका की प्रेम और सहानुभूति से सेवा कर रहा था |और उसका हटना एक परिचारिका के हटने के समान लगता था |

**प्र.7- गिल्लू की किन चेष्टाओं से यह आभास मिलने लगा था कि अब उसका अंत समय समीप है ?**

उत्तर- गिलहरियों के जीवन की अवधि दो वर्ष से अधिक नहीं होती | गिल्लू भी दो वर्ष का हो गया था | उसकी जीवन यात्रा का अंत समीप आते ही उसने खाना - पीना छोड़ दिया, न ही घर से बाहर गया, वह झूले से उतरकर लेखिका के बिस्तर पर उनकी उँगली पकड़कर चिपक गया | उसके पंजे ठंडे होने लगे थे - इन सभी चेष्टाओं को देखकर लेखिका को यह आभास हो गया कि अब गिल्लू का अंत समय समीप है |

**प्र.8- 'प्रभात की प्रथम किरण के स्पर्श के साथ ही वह किसी और जीवन में जागने के लिए सो गया' - का आशय स्पष्ट कीजिए |**

उत्तर- इस कथन का आशय यह है कि सुबह की पहली किरण के साथ ही गिल्लू ने अपने जीवन की अंतिम साँस ली | प्रकृति का यही अटल नियम है कि मृत्यु के बाद आत्मा किसी नए शरीर में जाकर एक नए रूप में जन्म लेती है | गिल्लू की आत्मा ने भी गिलहरी के पुराने शरीर को त्याग दिया, जिससे वह इस संसार में किसी और रूप में अवतरित हो सके |

**प्र.9- सोनजुही की लता के नीचे बनी गिल्लू की समाधि से लेखिका के मन में किस विश्वास का जन्म होता है ?**

उत्तर- सोनजुही की लता के नीचे बनी गिल्लू की समाधि से लेखिका के मन में इस विश्वास का जन्म हुआ कि किसी वासंती दिन गिल्लू अवश्य ही जूही के छोटे से पीले फूल के रूप में खिलेगा |

\*\*\*\*\*